अखंड् शक्ती दुर्गी मा

रागः दुर्गा ताळः आदि

पल्लविः

अखंड् शक्ती दुर्गी मा
हे शक्ति दुर्गी काली मा

चरणः

सब् ऊर्जा की आदी हो तुं अंबे मा
सब् चेतन् की कारण् हो तुं शक्ती मा
आग् की गर्मी जल् शीतल्ता तुम् हो मा
रोशनि अंधियारों से पार् हो दुर्गी मा ..१

जब्जब् जग्मे दानव्ता बढ् जाती है
धर्म् का आदर्-पालन् जब् घट् जाता है
मानव्ता कल्याण् की दीक्षा लेकर् तुम्
धर्ती पर् नव्मर्गी बन्कर् आती तुम् ...२

ब्रह्म् सॆ जग्की सृष्टी कर्वाती हो तुम्
हरि सॆ धर्ती पालन् कर्वाती हो तुम्
शिव्सॆ सब् सं-हारण् कर्वाती हो तुम्
सच्चिदानंद् सॆ हर् मन् पावन् कर्ती तुम् ..३